प्रातःक्लास 31/5/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। अभी तो यह बच्चे जानते हैं कि दैवी स्वराज्य का उद्घाटन हो चुका है। अभी तैयारी हो रही है वहाँ जाने के लिए। जहाँ कोई शाखा खोली जाती है तो कोशिश की जाती है बड़े आदमी, विद्वान आदि से ओपनिंग कराने। बड़े आदमी को देख नीचे वाले ऑफिसर आदि सभी आ जावेंगे। समझो, गवर्नर आवेगा तो बड़े–2 मिनिस्टर्स आदि आवेंगे। अगर कलैक्टर को तुम मंगावेंगे तो बड़े आदमी नहीं आवेंगे; इसलिए कोशिश की जाती है बड़े ते बड़ा आदमी आवे। किस न किस बहाने से अन्दर आवे तो तुम उनको रास्ता बताओ। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा कैसे मिलता है? ऐसा कोई दूसरा मनुष्य नहीं जो जानता हो तुम ब्राह्मणों के सिवाय। ऐसे भी सीधा नहीं कहना है भगवान आ गया है। ऐसे भी बहुत कहते हैं भगवान आ गया है; परन्तु नहीं। ऐसे अपन को भगवान कहलाने वाले तो ढेर आये हैं। यह तो समझाना है बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा दे रहे हैं कल्प पहले मिसल ड्रामा के प्लेन अनुसार। यह सारी सेन्टेंस लिखना पड़े। लिखत में पड़ने से मनुष्य पढ़ेंगे फिर कोशिश करेंगे। जिनके तकदीर में होगा। तुम बच्चों को तो मालूम है ना हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। यहाँ तो निश्चय बुद्धि बच्चे ही आते हैं। निश्चय बुद्धि भी फिर कोई समय संशय बुद्धि बन जाते हैं। माया पछाड़ लेती है। चलते–2 माया हरा देती है। ऐसा तो लॉ भी नहीं है ए(क) तरफ जीत हो, दूसरी तरफ हार हो ही नहीं। हार और जीत दोनों ही चलती है। अभी तुम जीत पा रहे हो। ऐसे भी नहीं कि सभी जीत पा सकते हैं। नहीं। यह तो युद्ध चलती है। युद्ध में भी तीन प्रकार के होते हैं। फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्डक्लास। कुस्ती अथवा बॉक्सिंग में भी तीन प्रकार की जोड़ियाँ आती हैं। सबसे पहलवान फर्स्ट क्लास, फिर सेकण्ड, थर्ड ग्रेड। यह तो तुम्हारी है माया के साथ युद्ध। इसमें भी फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास हूँ। कब–2 युद्ध न करने वाले भी देखने आ जाते हैं। वह भी एलाउ किया जाता है। अगर बहुत एलाऊ करेंगे तो सारा शहर आ जावेगा। कब–2 एलाऊ किया जाता है। शायद कुछ रंग लग जाये और सेना में आ जाये; क्योंकि दुनियां को तो यह पता नहीं है कि तुम महारथी योद्धे हो; क्योंकि तुम्हारे हाथ में तो कुछ भी हथियार पवार आदि नहीं है। तुम्हारे हाथ में हथियार आदि शोभेंगे नहीं; परन्तु बाप समझाते हैं ना ज्ञान तलवार, ज्ञान कटारी तो। तो उन्होंने फिर स्थूल समझ लिया है। तुम बच्चों को बाप ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। उन मनुष्यों को यह अज्ञान तलवार, काम कटारी। तुम बच्चों के हाथ में है ज्ञान की। हिंसा की बात ही नहीं। बेसमझ तो हैं ना। देवियों को स्थूल हथियार आदि दे दिये हैं, उनको भी हिंसक बना दिया है। यह है बिल्कुल बेसमझ। मूर्ख की भी हद न रही है। मूर्ख भी महामूर्ख हैं। तुम अभी फील करते हो कितने मलेच्छ थे। ऐसे नहीं कि तुम सभी वैष्णव थे, भक्त थे। सभी में दैवीगुण थे नहीं)।

बाप जानते हैं अच्छी तरह से कि कौन–2 फूल बनने वाले हैं। वह तो खुद ही बाप कहते हैं। फूल आगे होनी चाहिए। निश्चय है यह फूल बनने वाले हैं। बाबा नाम नहीं लेते हैं। नहीं तो और कहेंगे हम कांटे बनेंगे क्या? बाबा पूछते हैं नर से नारायण कौन बनेंगे तो सभी हाथ उठाते हैं। यूं तो खुद भी समझ सकते हैं। जो जास्ती सर्विस करते हैं वह बाप को भी याद करते हैं। बाप से प्यार है तो उनकी याद में भी रहेंगे। एकरस तो कोई भी याद कर न सके। याद नहीं कर सकते हैं; इसलिए प्यार नहीं। प्यारी चीज़ को तो बहुत याद किया जाता है। बच्चे प्यारे होते हैं तो माथा कूल्हे पर भी चढ़ा लेते हैं। छोटे बच्चे तो फूल हैं। जैसे तुम बच्चों की दिल होती है तो बाबा की गोद में जावें। वैसे छोटे बच्चे भी खैंचते हैं। झट बच्चे को (उठाकर) गोद में बिठावेंगे। प्यार करेंगे। यह बेहद का बाप तो बहुत ही प्यारा है। सभी मनोकामनाएं पूरी कर देते हैं। मनुष्य को क्या चाहता(ना) है। एक तो चाहते हैं तन्दुरुस्ती अच्छी हो। कब बीमार आदि न हों। सबसे अच्छी तन्दुरुस्ती। तन्दुरुस्ती अच्छी हो पैसे न हों तो तन्दुरुस्ती क्या काम की! फिर चाहिए धन, जिससे सुख मिले। बाप कहते हैं तुमको हेल्थ भी मिलनी है ज़रूर। यह कोई नई बात नहीं। यह तो बहुत (पुरानी)

बात है। तुम जब–2 मिलेंगे तो ऐसे ही पुरानी कहेंगे। बाकी यह कुछ भी नहीं कह सकेंगे कि लाखों वर्ष हुई वा पदमों वर्ष हुई। नहीं। तुम जानते हो यह नई कब होती है, फिर पुरानी कब होती है। हम आत्माएं नई दुनियां में जाती हैं। फिर पुरानी में आते हैं। तुम्हारा नाम ही रखा है ऑलराउंडर। बाप ने समझाया है तुम ऑलराउंडर हो। पार्ट बजाते–2 अभी बहुत जन्मों के अंत में आकर पहुँचे हो। पहले–2 शुरू में तुम पार्ट बजाने आते हो। वह है स्वीट सायलेन्स होम। मनुष्य शान्ति के लिए कितना हैरान होते हैं। यह नहीं समझते हम शान्तिधाम में थे, वहां आये हैं पार्ट बजाने। अगर यह याद रहे तो जंगल आदि में जाने की दरकार नहीं। शान्तिधाम से तो यहां आये ही हैं पार्ट बजाने। पार्ट पूरा हुआ फिर हम जहां से आये हैं वहां ज़रूर जावेंगे। सब शान्तिधाम से आते हैं। सबका घर वह ब्रह्मलोक है। ब्रह्माण्ड जहां सभी आत्माएं रहती हैं। रुद्र को भी इतना बड़ा बनाते हैं अण्ड मिसल। उनको यह पता नहीं है कि आत्मा बिल्कुल छोटी है। कहते हैं स्टार मिसल है। फिर भी पूजा बड़ी की ही करते हैं। यह समझने से तुम जानते हो इतनी छोटी पिण्डी की तो पूजा हो नहीं सकती। फिर भी पूजा नहीं तो किसकी करें? तो बड़ा बनाते हैं। पूजा करते हैं, दूध चढ़ाते हैं। वास्तव में तो वह शिव है अभोक्ता, फिर उनको दूध क्यों चढ़ाते हैं? दूध पीवे तो फिर भोक्ता हो गया। यह भी एक वण्डर है जो शिवबाबा को दूध चढ़ाते हैं। ज़रूर मात–पिता बनते होंगे; परन्तु वे जो सब कुछ करते हैं वह सभी हैं सा०। प्रैक्टिकल में कुछ भी नहीं है। सब कहते हैं वह हमारा वार्स(वारिस) हैं। हम उनके वारिस हैं; क्योंकि हम उन पर फिदा हुये हैं। जैसे बाप बच्चों पर फिदा हो सारी प्रॉपर्टी उनको दे खुद वानप्रस्थ में चले जाते हैं। यहां भी तुम समझते हो बाबा पास जितना हम जमा करेंगे; क्योंकि इनको अविनाशी बैंक कहा जाता है। ऐसे अविनाशी बैंक और कोई होती नहीं। जितना जमा करेंगे उतना सेफ हो जावेगा। गायन भी है किनकी दबी रहे धूल में... तुम बच्चे तो जानते हो कुछ भी रहने का नहीं है। सभी भस्म हो जाना है। ऐसे भी नहीं है, समझो एरोप्लेन गिरते हैं, विनाश होता है तो कोई चोरों को माल मिलता है। नहीं। चोर आदि खुद भी ख़त्म हो जावेंगे। उस समय चोरकारी भी बंद हो जावेगी। नहीं तो एरोप्लेन गिरते हैं तो पहले–2 चोरों को ..... आती है। फिर वहां ही जंगलों में जाकर छिपा देते हैं। सेकण्ड में काम कर लेते हैं। खेतों से भी बहुत धन निकालते हैं। ज़मीनदार आदि बहुत धनवान होते हैं ना। डर लगता है तो फिर ले जाते हैं। किसको भी पता न पड़े। दिवालों आदि में छिपाते हैं। मिस्त्रियों को तो पता पड़ता है। फिर वह लोग उनको कमीशन देते हैं। बड़े–2 ऑफिसर आदि मिलकर खाते हैं। अनेक प्रकार के काम करते हैं। कोई रॉयलिटी से, कोई अनरॉयलिटी से। तुम जानते हो यह सभी विनाश हो जावेंगे और तुम सारे विश्व के मालिक बन जावेंगे। तुमको कहां भी कुछ ढूँढ़ना नहीं पड़ेगा। तुम तो बहुत ही ऊँच घर में जन्म लेते हो। पैसे की दरकार ही नहीं। राजाओं को कब पैसे लेने का ख़्याल नहीं होगा। देवताओं को तो बिल्कुल ही नहीं रहता। बाप तुमको इतना सब कुछ दे देते हैं जब कब चोर–चकारी, ईर्ष्या आदि की बात ही नहीं। तुम बिल्कुल फूल बन जाते हो। कांटे और फूल हैं ना। यहां सभी कांटे हैं। भल बड़ा आदमी होगा विकार बिगर थोड़े ही रह सकेंगे। तो उनको ज़रूर कांटा ही कहना पड़े ना। बाप समझाते हैं यह सभी कांटे हैं। राजा से लेकर सभी कांटे हैं। तब बाबा कहते हैं मैं तुमको इन राजाओं का भी राजा बनाता हूँ। यह कांटे फूलों के आगे जाकर माथा झुकाते हैं। यह तो समझ है ना यह भी बाप ने समझाया है सतयुग वालों को महाराजा, त्रेता वालों को राजा कहा जाता है। बड़े आमदन(ी) तो कहेंगे महाराजा। छोटी आमदनी वालों को राजा कहेंगे। यहां कोई पैसे इकट्ठा हैं तो फिर अपलाय कर सकते हैं महाराजा का टाइटिल लेने लिए। खर्चा लगता है। लाख दो लाख ... देने से महाराजा बन जाते हैं। महाराजा के दरबार पहले होंगे मर्तबे तो होते हैं ना कुर्सियां भी मिलेगी .....। समझो न आने वाला कोई आ जाता है तो पहले कुर्सी उनको देंगे। इज्जत रखनी होती

तुम भी जानते हो हमारी माला बनती है। यह भी सिर्फ़ तुम बच्चों की ही बुद्धि में है। और किसकी बुद्धि में नहीं है। रुद्रमाला उठाकर (फे)रते रहते हैं। तुम भी (फे)रते थे ना। अनेक मंत्र जपते हैं। जो जिसका होगा मंत्र जपेगा। कोई तो सन्यासी कहते हैं हमको याद करते रहो। तो बहुत गुरू की भी माला (फे)रते हैं। व्यभिचारी हो गये हैं ना। बाप कहते हैं यह सभी है भक्तिमार्ग। यहां तो एक को ही याद करना है। और बाप साफ कहते हैं– मीठे–2 रूहानी बच्चों। भक्तिमार्ग देहअभिमान कारण तुम सभी को याद करते थे। अभी मामेकं याद करो। एक बाप मिला है तो उठते–बैठते बाप को याद करो तो बहुत ही खुशी होगी। बाप को याद करने से सारे विश्व की बादशाही मिलती है। जितना टाइम कम होता जावेगा उतना जल्दी–2 करते रहेंगे। दिन–प्रतिदिन दुःख बढ़ते रहेंगे। आत्मा कब थकती नहीं है। तुम शरीर से कोई पहाड़ आदि पर चढ़ेंगे तो थक जावेंगे। बाप को याद करने में तुमको कोई थकावट नहीं होगी। खुशी में रहेंगे। बाबा को याद कर आगे चलते जावेंगे। आधा कल्प बच्चों ने मेहनत की है शान्तिधाम में जाने लिए; पर एम ऑबजेक्ट का कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चों को तो परिचय है भक्तिमार्ग में जिसके लिए इतना सभी कुछ किया वे कहते हैं अभी मुझे याद करो। तुम ख़्याल करो बाबा ठीक कहते हैं या नहीं। वे तो समझते हैं पानी से ही पावन हो जावेंगे। यह है सभी झूठ। पानी तो यहां भी है। तो क्या यह गंगा का पानी है? नहीं। यह तो बरसात का इकट्ठा हुआ पानी है। फिर झरणों से आता ही रहता है। कभी बंद नहीं होता। यह भी कुदरत है। बरसात बंद हो जाती है; परन्तु पानी आता ही रहता है। इनको गंगा का पानी नहीं कहेंगे। वैष्णव लोग हमेशा कुआँ का ही पानी पीते हैं। एक तरफ समझते हैं पवित्र है और दूसरे तरफ फिर समझते हैं पतित से पावन बनने स्नान करने जाते हैं। इनको तो अज्ञान की(ही) कहेंगे ना। बरसात का पानी तो अच्छा ही होता है। यह भी ड्रामा का कुदरत कहा जाता है। खुदाई नैचुरल कुदरत। बीज कितना छोटा होता है। उनसे झाड़ कितना बड़ा निकलता है। यह भी जानते हो धरती कलराटी हो जाती है तो उनमें ताकत नहीं रहती है। स्वाद नहीं रहता है। तुम बच्चों को यहां ही बाप सभी अनुभव कराते हैं। कैसे स्वर्ग होगा अभी तो नहीं है। ड्रामा में यह भी नूँध है। बच्चों को सा० होता है वहां के फल आदि कितने मीठे होते हैं। तुम ध्यान में देखकर आते हो और सुनाते हो। फिर अभी जो सा० करते हो वह वहां जब जावेंगे तो इन आँखों से देखेंगे, मुख से खावेंगे। सा० करते हो वह फिर तुम इन आँखों से देखेंगे। फिर है पुरुषार्थ पर। अगर पुरुषार्थ ही न करेंगे तो पावेंगे? तुम्हारा पुरुषार्थ चल रहा है हम ऐसे बनेंगे। इस विनाश के बाद इन ल०ना० का राज्य होगा अभी मालूम पड़ा है। पावन बनने में ही टाइम लगता है। याद की यात्रा बहुत ही मुख्य है। देखा बहन–भाई समझने से भी बाज़ नहीं आते हैं तो फिर अभी कहते हैं भाई–2 समझो। बहन–भाई से भी दृष्टि नहीं फिरती। भाई–2 देखने से फिर शरीर ही नहीं रहता। हम सभी आत्माएं हैं, शरीर नहीं हैं। यह बाप की युक्ति है। यहां जो कुछ देखने में आता है वह सभी विनाश हो जावेगा। यह शरीर छोड़ कर तुमको नंगे जाना है। तुम यहां आते ही हो सीखने के लिए। हम यह शरीर छोड़ कर आत्मा कैसे जावें? मंज़िल है ना। शरीर तो आत्मा को बहुत ही प्यारा है। शरीर न छूटे इसके लिए आत्मा कितना प्रबंध आदि करती है। हमारा यह शरीर न छूटे जाये। आत्मा को इस शरीर से बहुत ही प्यार है। बाप कहते हैं यह तो पुराना शरीर है। तुम तमोप्रधान हो। तुम्हारी आत्मा छी–2 है; इसलिए दुःखी, बीमार हो पड़ते हो। बाप कहते हैं अभी शरीर से प्यार नहीं रखना है। यह तो पुराना शरीर है। अभी तुमको नया खरीद करना है। कोई दुकान नहीं रखा है जहां से खरीद करना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बाजवेंगे(बन जावेंगे)। फिर शरीर भी पावन मिल जावेगा। 5 तत्व भी(ी) पावन बन जावेंगे। तत्वों आदि को भी याद न करना है। बाप सभी बातें समझा कर कहते हैं। कहते हैं मनमना(भव्) मुझे याद करो। अपन को आत्मा समझो। तुम समझते हो हम आत्मा हैं, हम शरीर नहीं हैं। हम मालिक हैं। एक

शरीर छोड़ दूसरा लेना है। हमको पार्ट मिला हुआ है जो बजाना है। नाटक में कब रोते हैं क्या? बाकी शास्त्र में जो बातें बैठ लिखी हैं वह सभी दंत कथाएं। अभी यह भक्तिमार्ग खलास ज़रूर होना है। भक्ति करते माला (फे)रते ऐसे ही ख़त्म हो जावेंगे। बैठे–2 मरते रहेंगे। कब न कब ऐसे मरते रहेंगे। तब बाप समझाते हैं अभी जास्ती बच्चे फदा(पैदा) न करो। कोई भी काम के नहीं रहेंगे। कोई के भी बच्चे वारिस नहीं बनेंगे। अभी समय ही नहीं है जो बच्चे बड़े हों और वारिस बन सकें। वह समझते हैं बच्चे बड़े होंगे, वारिस बनेंगे; क्योंकि वह समझते हैं कलियुग की आयु बहुत बड़ी है। बाप कहते हैं यह है 5000 वर्ष का ड्रामा। तुम हिसाब करते रहो। अभी बच्चे क्या वारिस बन सकेंगे? तो क्यों .. फिर भी रखते हैं; क्योंकि मोह बहुत है। पिछाड़ी में कहेंगे, बाबा यह लो। बाबा कहेंगे टू लेट। अभी हम क्या करेंगे? यह तो सभी ख़त्म हो जाना है। हम लेवें ही क्यों जो फिर भर कर देना पड़े। हम पक्का शराफ हैं। कोई से लेवें और ख़त्म हो जावें फिर हमको भरकर देना पड़े। ऐसा हम लेवें ही क्यों; इसलिए ग़रीब बहुत आते हैं। जो दो कणा भी देते हैं तो भी मिलता बहुत है। मम्मा का मिसाल है। जल्दी ही चले जाते हैं; क्योंकि योग नहीं है। कर्मातीत अवस्था न बनी। बाकी जो कमाई की है चली नहीं जाती। जन्म हुआ है तो भी बहुत ऊँच घर में। जहां सर्विस कर रही है। इनके चरित्र ही ऐसे हैं। फिर भी बहुत ताकत ले गई है ना। बेहद की बाप की ताकत ली। आत्मा में ताकत होगी तो चरित्र भी ऐसे ही चलेंगे। कृष्ण में ताकत थी। तब तो चरित्र दिखाते थे। कैसे फर्स्ट क्लास बच्चे होंगे। कब रोयेंगे नहीं। तो माँ–बाप क्या समझेंगे। कहेंगे यह तो देवता है। देवताएं कब रोते नहीं हैं। ज़रूर कोई दैवी गुणों वाला बिछुड़ कर आया है। गुण साथ में ले आये हैं। तो जाकर सर्विस करते हैं ना। तुम शरीर छोड़ते हो तो भी सर्विसएबुल हो। जितना पहले गये हैं बड़े होकर फिर आवेंगे। आधा में छोड़ा हुआ फिर लेने आवेंगे। आगे चलकर यह भी बाबा बता देंगे कि तुम्हारा आगे वाला फलाना नाम बाला है। यह भी बतावेंगे। फिर तुमको खुशी होगी। जबकि बाप इतना सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाते हैं तो यह क्यों नहीं बतावेंगे। ड्रामा में पार्ट है। अभी तक बहुत रहा हुआ है। बाप गुह्य–2 बातें सुनाते हैं जो पहले नहीं सुनाई थी। कोई कहते हैं पहले क्यों नहीं बताया? अरे, यह तो ड्रामा है ना। सुनाते जावेंगे तुम एक्सपेट करो। बाबा जब तक है गुह्य–2 बातें सुनाते रहेंगे। कोई पूछे फिर क्या होगा? बोलो, बाबा ने यह थोड़े ही बताया है। आगे चल बतावेंगे। अगर तुम यहां जीते रहेंगे तो सुनावेंगे। मर जावेंगे तो सुनेंगे नहीं। अच्छा।

माला का अर्थ भी तुम समझ गये हो। तुम माला क्या फेरेंगे? शिवबाबा तो बैठे हैं। तुम नमस्कार किसको करेंगे? देवताओं से भी ऊँच हैं ब्राह्मण। शिवबाबा तुम ब्राह्मणों को पढ़ा रहे हैं। तुम सारे विश्व को पवित्र बनाते हो। अभी तो है नर्क। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। घोर–अंधियारा है ना। ज्ञान से सद्गति होती है। भक्ति से दुर्गति। सन्यासी खुद यह नहीं समझते। तुम समझाओ तो झट समझेंगे। आधा कल्प ज्ञान, आधा कल्प भक्ति। फिर है पुरानी दुनियां से वैराग्य। देह सहित देह के जो भी सम्बंध देखते हो सभी को भूलते जाओ। तुम बच्चों को इनको न पांव पड़ना है, न हाथ ही जोड़ना है। यह तो बाबा है ना। घर में बच्चे (घ)ड़ी–2 हाथ जोड़ते हैं क्या? फिर तो सारा समय हाथ जोड़ खड़े हो जाये। यह सभी है भक्ति। शिवबाबा कहते हैं मैं तो तुम्हारा गुलाम हूँ। तुमको राजाई दे मैं वानप्रस्थ में बैठ जाता हूँ। यहां तुमको बेसमझ से समझदार बनना है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनियां है, इसमें सभी बेसमझ हैं। नई दुनियां में समझदार थे। अभी फिर बनाते हैं। बाप कहते हैं मांगो कुछ भी नहीं। पुरुषार्थ करो। यह तो समझते हो पवित्र योगी थे। अभी अपवित्र भोगी बने हैं; इसलिए आयु भी छोटी हो गई है। फिर आधा कल्प लिए तुम्हारी आयु बड़ी हो जावेगी। वहां है 21 जन्म, फिर अपवित्र बनने से 63 जन्म लेते हो। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।